Page No 1

# राजस्थान विधान सभा का कार्य-विवरण

अङ्क १० ] द्वितीय विधान सभा के दशम् सत्र, १६६१ का १३वां दिवस [ संख्या ५



मंगलवार, ७ मार्च, १६६१

विधान सभा की बैठक म० पू० ११ बज कर १८ मिनट पर विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

---

( श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन )

---

## श्री गोविन्द बल्लभ पन्त केन्द्रीय गृह मंत्री के दु:खद अवसान पर श्रद्धांजलियें

**मुख्य मन्त्री** (श्री मोहनलाल सुखाड़िया): माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन को यह सूचित करते हुए मुझे अत्यन्त दु:ख हो रहा है कि आज प्रात: ८.५० पर भारत के महान् नेता, पं० पंत का देहावसान हो गया।

कई दिनों से हम सब इस बात से चिन्तातुर थे कि जो तारीख २० से उनकी अस्वस्थता चल रही है उससे किसी प्रकार परमात्मा उनको बचाकर फिर से देश की सेवा के लिए उपलब्ध कर सके, लेकिन आखिर आज जो देश में कोई नहीं चाहता था वह दिन आया।

पं० गोविन्दवल्लभजी पन्त देश के उन महान् नेताओं में से एक रहे हैं जिन्होंने आज से पचास वर्ष पूर्व देश की सेवा का कार्य शुरू किया था और कई प्रकार की यातनाएं, यहां तक कि भयंकर लाठी चार्ज जैसा सहन करके भी, शारीरिक क्षति उठाकर भी देश की सेवा में वे निरन्तर लगे रहे। कुल मिलाकर यू. पी. में और भारत सरकार में १७ वर्ष तक उन्होंने चीफ मिनिस्टर और होम मिनिस्टर के तौर पर देश की सेवा की। कई मर्तबा जेल गये और देश के बड़े बड़े निर्णय करने में उनका हाथ रहा। यू. पी. में जब किसानों के लिए एग्रेरियन रिफॉर्म्स का प्रश्न था, उसमें उन्होंने बहुत बड़ा हिस्सा अदा किया। राजस्थान के भूमि सुधारों में उनकी बहुत बड़ी देन रही और जो देश के अन्दर सारी स्टेटों का पुनर्विभाजन हुआ, जो बहुत ही मुश्किल कार्य था, उसको उन्होंने समझदारी से पूरा किया। वे हिम्मत वाले, सूझ-बूझ वाले, मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों के अन्दर संतुलन रखते हुए निर्णय करने वाले व्यक्तियों में से एक महान् व्यक्ति

# Page No 2



( श्री मोहनलाल सुखाड़िया )

थे। देश के जो बड़े बड़े निर्णय लिए जाते थे उनमें पंडित गोविन्दवल्लभजी का हाथ हुआ करता था और एक प्रकार से उस पुरानी पीढ़ी के वे महान् स्तम्भ थे जिन्होंने देश को इस बीच के समय में आगे बढ़ने में एक महत्वपूर्ण हिस्सा अदा किया। व्यक्तिगत तौर से मैं एक निजी आघात और क्षति का अनुभव करता हूँ। २० तारीख से ही वे बेहोशी की स्थिति में रहे। एक रोज पहले अन्तिम रूप से उनसे मिलने का अवसर मुझे मिला और उसके बाद अचेत अवस्था में देखने के सिवाय उनसे कोई और बातचीत का, सलाह का मौका नहीं था। ऐसे महान् व्यक्ति की क्षति से मैं समझता हूँ कि देश ने हमेशा के लिए एक क्षतिपूर्ति न होने वाले आघात को आज सहन किया है। मैं अधिक इस अवसर पर नहीं कहते हुए इतना ही परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे बहादुर व्यक्ति को जिन्होंने जीवित रहते हुए मुश्किल से मुश्किल चीजों का मुकाबिला किया और अन्त मृत्यु का भी, कई दिनों तक लेटे हुए मुकाबिला किया, ऐसे महान् व्यक्ति की आत्मा को शान्ति मिले, उनके परिवार वालों को शान्ति मिले और हमारे प्रधान मन्त्री को भी हम इस अवसर पर, जो उनके इतने निकट के साथी थे, सलाहकार थे, उनकी क्षति के लिए उनको भी संवेदना का सन्देश भेजें और यह सदन मौन रह कर प्रार्थना करे कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले, यही मैं निवेदन करना चाहता हूँ और इसके साथ ही साथ मौन रह कर प्रार्थना करने के बाद सदन की कार्यवाही आज के लिए स्थगित की जाये, उनके सम्मान में।

**रावल श्री नरेन्द्रसिंह** (दूदू) : अध्यक्ष महोदय, ऑपोज़िशन की ओर से मैं निवेदन करता हूँ कि आज यह दुःखद समाचार सुन कर प्रत्येक भारतवासी को भी और यहां दोनों तरफ की पार्टियों को अत्यन्त खेद हुआ है और इसके लिए इस दुःखद अवसर के ऊपर हम सब की ओर से खेद प्रकट करते हैं और इसके अलावा परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके परिवार को और जो दूसरे उनके मित्र हैं उनको सांत्वना दे।

**श्री भैरोंसिंह** (श्रीमाधोपुर) : अध्यक्ष महोदय, सदन के माननीय नेता ने स्वर्गीय पंतजी के सम्बन्ध में जो भावपूर्ण श्रद्धांजलि सदन में अर्पित की है मैं भी इस सम्बन्ध में उनके साथ हूँ। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि जिस समय देश को इस प्रकार के शक्तिशाली व्यक्तित्व की आवश्यकता विशेष रूप से होती है उस समय देश के ऊपर इस प्रकार के वज्र प्रहार होते हैं। आज जहां अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अन्दर नित नये परिवर्तन सामने आते हैं वहां इस बात की विशेष आवश्यकता थी कि हमारी आन्तरिक स्थिति को सही प्रकार से निभा सकने वाले व्यक्ति के हाथ में आन्तरिक मामलों का प्रशासन हो। मैं समझता हूँ कि स्वर्गीय सरदार पटेल के पश्चात् हमारे देश की आन्तरिक परिस्थितियों को जैसा भली-भांति पंतजी ने निभाया है वह देश के लिए एक गौरव की बात थी। स्टेट्स री-ऑर्गेनाइ-जेशन की रिपोर्ट के पश्चात् जो देश में परिवर्तन हुए और उन सारे परिवर्तनों का जिस दृढ़ नीति के साथ उन्होंने परिपालन किया वह हमारे लिए इस बात का काफी परिचायक है कि वे केवल नीति बनाने वाले

Page No 3



( श्री भैरोंसिंह )

ही नहीं थे बल्कि अपनी नीतियों को कार्य रूप में सख्ती के साथ परिणत करने की भी उनमें क्षमता थी । अध्यक्ष महोदय, आज जहां हमारे देश में प्रजातंत्र का विकास हो रहा है, हमारा देश इस बात के लिये पंतजी को नहीं भुला सकता कि आज इस देश के अन्दर यदि मैं यह कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वे वैस्ट पार्लिया-मेन्टेरियन थे जिसके कारण जितने भी पार्लि-यामेन्टरी डेमोक्रेसी में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं वे उनसे कई तरह की प्रेरणा लेते थे । उनकी सारभूत बुद्धि और अकाट्य तर्क, किसी भी प्रकार का कोई विरोध क्यों न हो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे । आज इस स्थिति के अन्दर जहां कुछ अराष्ट्रीय मनोवृत्ति भी अपने देश में पनपने की कोशिश कर रही है उस स्थिति में उनका अभाव, हम पर किस प्रकार का आघात होगा इसको यदि थोडा सा अनुभव किया जाये तो मैं यह कह सकता हूँ कि यह एक बहुत बड़ा आघात हमारे देश के ऊपर हुआ है । इस सारी परिस्थिति के अन्दर मैं इतना कह सकता हूँ कि ईश्वर के सामने किसी का कोई वश नहीं चलता है और ऐसी स्थिति में सिवाय इसके कि उनके प्रति जो श्रद्धांजलि अर्पित की जाये वह श्रद्धांजलि अर्पित करें और आपसे इस बात का अनुरोध करें कि सदन की ओर से उनके परिवार के जितने भी दु:खी व्यक्ति हैं, उनके मित्र जो दु:ख के कारण दु:खी हैं और मैं तो यह कहूँ कि हमारे पूरे राष्ट्र को उनकी मृत्यु के कारण दु:ख है उन सब को हमारी ओर से संवेदना प्रकट करते हुए इस सारे आघात को सह सकने की शक्ति प्रदान करें, इस प्रकार की ईश्वर से प्रार्थना करें । मैं समझता हूँ कि आज इस सम्बन्ध में इस प्रकार का ही कहना काफी होगा और यही कह कर मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूँ ।

**श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी** ( डीग ) : अध्यक्ष महोदय, पूज्य पंतजी के देहावसान से हमारे देश और राष्ट्र को कितनी बड़ी भारी क्षति हुई है वह तो किन शब्दों में वर्णित किया जाये, लेकिन मेरे जैसे लोगों को एक व्यक्तिगत आघात भी उनके इस निधन से हुआ है । मुझे उन दिनों का आज भी स्मरण हो रहा है जब कि हम लोग, खास तौर से भरतपुर के, देशी राज्यों के निवासी अपने उत्तरदायित्वपूर्ण शासन के प्रश्न को लेकर जूझ रहे थे, उस समय हमको मौके, हर मौके पर पंतजी से सबसे ज्यादा सलाह मशविरा करने का मौका मिलता था ।

पंडित पंतजी एक राष्ट्रीय नेता के रूप में, जो उस समय ब्रिटिश भारत था उसके नेता हो नहीं थे; बल्कि वे देशी रियासतों में चलने वाले आन्दोलनों में भी सबसे अधिक सक्रिय भाग लेते थे । जब जब नेहरूजी से मिलने का मौका मिला तब तब वे समय समय पर पंतजी को ही उपयुक्त व्यक्ति समझते थे । ऐसे मौके पर स्वतन्त्रता से पहले जब प्रान्तीय स्वायत्त शासन के समय वे उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री थे तब हमारे यहां आन्दोलन चलता था उन दिनों में उन्होंने हमको साहस बंधाया था और कहा था कि एक दिन आयेगा जब कि आप लोगों पर रियासतों में जो अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं वे दूर होंगे और हर मौके पर उनकी ओर से प्रेरणा मिलती थी । आज देश

# Page No 4



( श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी )

अनुभव कर रहा है कि हमारे ऊपर सबसे सुदृढ़ हाथ था, प्रेरणा पूर्वक सन्देश देने वाला था वह हट गया है। आज सारा देश उनके इस निधन से दुःखी हो रहा है। मैं समझता हूँ, कुछ लोगों को उनके निधन से और भी अधिक पीड़ा हो रही है। जिस तरह वे विदेशी शासन के विरोध में जूझते रहे, साहस के साथ मृत्यु के साथ भी उन्होंने उसी बहादुरी के साथ मुकाबला किया। किन्तु यह दुःखद अवसर आ ही पहुँचा जिसे बहुत चिन्ता के साथ महसूस कर रहे थे और आज प्रातःकाल यह दुःखद समाचार मिला कि पंतजी हमारे बीच नहीं रहे हैं। पंतजी के न रहने से हमारे महान् नेता, प्रधान मन्त्रीजी को कितना सदमा और आघात पहुँचा होगा, उसे वे ही समझ सकते हैं, जो उनके सम्बन्धों से परिचित हैं। इस अवसर पर हम लोग परमात्मा से यही प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को स्वर्ग में शान्ति और उनके परिवार वालों को धैर्य प्रदान करें।

**श्री उपाध्यक्ष** (श्री निरंजननाथ आचार्य) : अध्यक्ष महोदय, मैं भी इस मौके पर हमारे सदन के माननीय नेता की भावनाओं के साथ अपनी भावनाओं को सम्मिलित करता हूँ। निश्चय ही श्री पंतजी के निधन से राष्ट्र को तो हानि हुई ही है और वह हानि सदियों तक किसी तरह से पूरी हो सकती है, इसकी सम्भावना नहीं। किन्तु मेरी मान्यता है कि श्रद्धेय पंतजी की भावनाओं, और उनका संपर्क और उनका दृष्टिकोण जहां तक राजस्थान से सम्बन्धित है, हमारी संस्कृति, हमारी तवारीख और हमारे इतिहास के साथ बराबर जुड़े हुए रहे। राष्ट्र के नुक्सान के साथ साथ राजस्थान को कितना नुक्सान है यह स्वयं हमारे सदन के नेता, जो उनकी बीमारी के आरम्भ से बराबर व्यथित दिखाई दे रहे थे, को ज्यादा अनुभव है।

यों तो अध्यक्ष महोदय, जिन्दगी के साथ मृत्यु के क्षण और मृत्यु की संभावना बंधी हुई चलती है लेकिन ऐसे महानुभाव का जन्म हमारे राष्ट्र के लिये जितना अमूल्य था उतना ही उनकी मृत्यु से आघात पहुँचा है। इसका अनुमान हमारा राष्ट्र किसी तरह से लगा नहीं सकता। महामानव के प्रयाण का एक विशेष प्रशस्त पथ होता है। श्रद्धेय पंतजी ने मृत्यु के आरम्भ के पहले ही राष्ट्र को सजग किया और इतना सबल किया कि इस सदमे को वह (राष्ट्र) बहादुरी से सामना कर सके, क्षमता रख सके। इसलिये दिन प्रति दिन बीमारी और रूग्णता की सूचना सुन सुन कर राष्ट्र इतनी तैयारी अवश्य कर गया कि वह इस सदमे को, जो किसी भी क्षण आने की सम्भावना रखता था, सहने को तैयार हो गया। हम किन शब्दों में और किससे संवेदना प्रकट करें? यह प्रश्न राष्ट्र का प्रश्न

# Page No 5



( श्री उपाध्यक्ष )

है, व्यक्ति विशेष का नहीं। इसलिये मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करके राष्ट्र को अपनी संवेदना अर्पित करता हूँ और विश्वास रखता हूँ कि जिस महामानव ने राष्ट्र की इतनी सेवा की और जो महामानव हमारे प्रधान मंत्री के पथ पर जीवन भर चलता रहा, प्रति क्षण उनके साथ रहा उस महामानव को चिरंतन शान्ति मिले, यही भावना सदन की है और यही मेरी है।

**श्री अमृतलाल यादव** (जालोर—सु०) : अध्यक्ष महोदय, देश के महान् नेता के निधन से हमारा सारा राष्ट्र शोकाकुल हो गया है। माननीय अध्यक्ष, पंतजी के गृह मंत्रालय ने देश के उपेक्षित अंग हरिजनों के लिये बहुत कुछ किया है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने इस वर्ग की सच्चे दिल से सरकार में रह कर भी और बाहर भी अपने प्रभाव का उपयोग करके समस्याओं को निरंतर हल करने के लिये सक्रिय, क्रियात्मक कदम उठाया था। जो कुछ हरिजन समाज में शिक्षित लोग उच्च पदों पर दिखाई दे रहे हैं वे उन्हीं के महान् प्रयत्न के फलस्वरूप हैं। उन्होंने ऐसे ऐसे नियम बनाये और व्यक्तिशः उन बातों पर जोर दिया जिनसे उनको ऊंचा उठाया जा सके। उनको ये लोग कभी नहीं भूल सकते और उन्होंने जो देश की सेवाएं की हैं उनको हमारा देश सदा याद करता रहेगा। मैं नहीं समझता कि उनकी पूर्ति निकट भविष्य में हो सकेगी। आज निस्संदेह हमारे राष्ट्र में बड़े शोक का अवसर है और परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे, इतना ही निवेदन करता हूँ।

**श्री अध्यक्ष** ( श्री रामनिवास मिर्धा ) : माननीय सदन के नेता और अन्य माननीय सदस्यों ने जो पंडित गोविन्दवल्लभजी पंत के निधन पर अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं उनमें मैं भी अपनी भावनाएं सम्मिलित करता हूं। पंतजी के निधन से हमारे राष्ट्र को एक बहुत बड़ी हानि हुई है, जो पूरी होनी संभव नहीं है। पिछली करीब अर्द्ध शताब्दी से पंतजी हमारे राष्ट्रीय जीवन में, हर प्रगतिशील कार्य में अग्रणी रहे हैं। पहले स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में और उसके बाद एक कुशल प्रशासक के रूप में उन्होंने देश की सेवा की, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे और उसके बाद भारत सरकार के गृह मंत्री के रूप में उन्होंने देश की सेवा की। वे एक बहुत ही कुशल पार्लियामेन्टेरियन थे और जिन किन्हीं माननीय सदस्यों ने उन्हें पार्लियामेन्ट में बहस में भाग लेते देखा है वे उनसे अवश्य प्रभावित हुए होंगे। मैं तो निश्चित तौर से कह सकता हूं कि हमारे देश के वे सर्वश्रेष्ठ पार्लियामेन्टेरियन थे। इसलिये इस दृष्टिकोण से हमारी इस संस्था को, पार्लियामेन्टरी डेमोक्रेसी में, एक बहुत ही आघात पहुंचा है। हमारी कॉन्स्टीट्युएन्ट

# Page No 6



( श्री अध्यक्ष )

असेम्बली, जिसने संविधान की रचना की, उसके भी ये सदस्य रहे और हमारे विधान को बनाने में उनका बहुत बड़ा हिस्सा रहा। इन सब बातों को देखते हुए यह हमारे लिये बहुत ही शोक का विषय है कि आदरणीय पंतजी हमारे बीच में नहीं हैं। इस अवसर पर मैं आप से निवेदन करूंगा कि २ मिनट तक आप मौन खड़े रहें और दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान हो, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करें।

( सदन के माननीय सदस्यों ने २ मिनट तक मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की )

**श्री अध्यक्ष** : जो भावनाएं माननीय सदस्यों ने व्यक्त की हैं वे पंतजी के शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जायेंगी।

सदन की कार्यवाही कल प्रातः काल ११ बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

( तदनन्तर सदन की कार्यवाही म० पू० ११.४१ बजे, दिनांक ८ मार्च, १९६१ के म० पू० ११ बजे तक के लिये स्थगित हुई।)

---

Page No 7



## संक्षिप्त विवरण

( मंगलवार, ७ मार्च, १९६१ )

स्कम्भ स्कम्भ

**शोक प्रकट**

स्वर्गीय श्री गोविन्दवल्लभ पंत, केन्द्रीय गृह मंत्री के निधन पर सदन के नेता श्री मोहनलाल सुखाड़िया, रावल श्री नरेन्द्रसिंह, श्री भैरोंसिंह (१४), श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी, विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य, व श्री अमृतलाल यादव ने अपनी २ श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए संवेदना प्रकट की।

तदुपरान्त अध्यक्ष, श्री रामनिवास मिर्धा, ने सदन द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं में अपनी भावनाओं को भी सम्मिलित करते हुए शोक प्रकट किया।

इसके पश्चात् सदस्यों द्वारा २ मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गई और सदन की बैठक प्रातः ११-४१ बजे स्वर्गीय पंतजी के सम्मान में बुधवार दिनांक ८ मार्च, १९६१ को प्रातः ११ बजे तक के लिये स्थगित की गई।

**बुधवार, ८ मार्च, १९६१ की कार्य-सूची**

१. अनुपूरक अनुदानों ( १९६०-६१ ) की मांगों ( द्वितीय खण्ड ) के विवरण का उपस्थापन।

२. विधेयकों का पुरःस्थापन

३. अनुपूरक अनुदानों ( १९६०-६१ ) की मांगों पर मत-दान

४. राजस्थान विनियोग ( संख्या १ ) विधेयक, १९६१ ( पुरःस्थापन, विचार-विमर्ष एवं पारण )

## शुद्धि–पत्र

(मंगलवार, ७ मार्च, १९६१)

| स्कम्भ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ |
| ९६८ | ८ | पन्त केन्द्रीय गृह मंत्री | पन्त, केन्द्रीय गृह मंत्री, |
| ९७०–९७९ | शीर्षक | केन्द्रीय, गृह मंत्री श्री पंत, के | केन्द्रीय गृह मंत्री, श्री पन्त, के |
| ९७० | ५ | बाढ़ने में | बढ़ाने में |
| ,, | १७ | इतना ही | इतनी ही |
| ९७४ | १८ | करते है | करते हैं |
| ९७५ | २१ | सदमे को | सदमे का |

## अनुपूरक शुद्धि–पत्र

| स्कम्भ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ९७४ | शीर्षक | चतुवेंदी | चतुर्वेदी |
| ९८१ | अन्तिम से २ | विचार–विमर्ष | विचार–विमर्श |